



NURVI-02





SHUBH SHREE
CREATION

2006






SRI SRI SRI
CREATOR



2005





2004



स्वयंभूवः प्रथमः प्रकृतः प्रकृतः प्रकृतः
 स्वाहा - कुम्भाय गोविन्दाय
 गोपी - अस्तभाव सदाह
 त्वावनी महामातै महायोगिन्दीश्वरी ।
 द गोपसुत देवि पति मे कुरुते नमः ।
 मे नो शंकराय सकल जन्तवितं पाप
 विष नाथ पुरुषार्थं चतुस्तय साभाष स
 पति मे देहि कुरु-कुरु साहा ।
 म् भगवान् विष्णुः, महत्तमं गणनायकं
 लम् पुण्यं कुरु, महत्तमं लभे सुदि ।
 गीर्वाणाय शक्ति शक्त शक्ति शक्ति ।
 कुरु कल्पानि कल्पानि कुरु कल्पानि ।
 वेन्द्राय नमस्तुभ्य देवेन्द्राय भूमिनि ।
 साहा भाग्यवन्तस्य शीघ्रं च देहि मे ।
 राघवं राज राघवी मेह
 वि धनसु गोधर्मे राह
 जे मे राघवराजे राम

द्वे सु दसरथ अजर बिहारी
 होरु वही जो राम रथ राखा
 को करे तरफ बढ़ाए साखा
 धीरज धरम मिल अरु नारी
 आपद काल परक्षिये घारी
 जेहि के जेहि पर सत्य सनेह
 सो तेहि मिलय न कछु सनेह
 जाकी रहो भावना जैसी
 प्रभु मूर्ति देखी तिन तैसी
 हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता
 कहहि सुनहि बहुविधि सब संता
 रघुकुल रीत सदा चली आई
 प्राण जाए पर वधन न जाई
 राम सिया राम सिया राम
 जय जय राम



2003








SHUBH SHREE
CREATION

2002





2001



सु दसरथ अजर बिहारी
होहे वही जो राम रथ राखा
को करे तरफ बढाए साखा

भीरज धरम मिल अरु नारी
आपद काल परसिधे चारी

जैहि के जैहि पर सत्य सनेह
सो तेहि मिलय न कछु सन्देह

जाकी रही भावना जैसी
प्रभु मूरति देखी तिन तैसी

हरि अनन्त हरि कथा अनन्त
कहहि सुनहि बहुविधि सब मता

रघुकुल रीत सदा चली आई
प्राण जाए पर वचन न जाई

राम सिया राम सिया राम
जय जय राम





2001



2002



2003



2004



2005



2006